अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं – जैन धर्म कोविद (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दें।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) आस्रव से आत्मा में आते हैं-

(क) शुभ कर्म (ख) अशुभ कर्म

(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं ( )

(b) राग-द्वेष की उत्पत्ति से लगने वाली क्रिया है -

(क) पाडुच्चिया (ख) दिट्ठिया

(ग) पुट्ठिया (घ) उपर्युक्त तीनों ( )

(c) ऊँचे स्वर से रोना-चिल्लाना है-

(क) आर्त्त ध्यान (ख) रौद्र ध्यान

(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं ( )

(d) अनुभाग बन्ध को नहीं कहते हैं-

(क) अनुभाव बन्ध (ख) अनुभव बन्ध

(ग) रस बन्ध (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )

(e) दशाश्रुतस्कन्ध में निदान करने के कितने रूप बताये हैं-

(क) 12 (ख) 11

(ग) 10 (घ) 09 ( )

(f) भिक्षाविधि का उल्लेख किस सूत्र में है-

(क) दशवैकालिक (ख) आचारांग

(ग) दोनों में (घ) दोनों में नहीं ( )

(g) प्रतिमाधारी किस कारण से बोलते हैं-

(क) याचना करते (ख) मार्ग पूछते

(ग) प्रश्न पूछते (घ) क तथा ख ( )

(h) मुनि के लिए ग्रहण करने योग्य लवण है-

(क) संचल (ख) सैंधव

(ग) समुद्री (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )

(i) द्वारिका के विनाश का कारण क्या था-

(क) सुरा (ख) अग्नि

(ग) द्वीपायन ऋषि (घ) उपर्युक्त सभी ( )

(j) 'चारों शरीर जीव सहगत होते हैं।' इसका प्रमाण है-

(क) आचारांग (ख) ठाणांग

(ग) सूयगडांग (घ) भगवती सूत्र ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) साधु-साध्वियाँ दर्पण आदि में मुख देख सकते हैं। ( )

(b) प्रथम चार निदानों वाला जीव केवली प्ररूपित धर्म नहीं सुन सकता। ( )

(c) प्रथम तथा अंतिम तीर्थंकरों के साधुओं के लिए राजपिण्ड निषिद्ध नहीं है। ( )

(d) संयम के अभाव में भी तप हो सकता है। ( )

(e) जो सर्वथा चेतना शून्य है, वह अजीव नहीं है। ( )

(f) एक पर्याप्त जीव की नेश्राय में असंख्यात अपर्याप्त जीव उत्पन्न होते हैं। ( )

(g) सभी उरपरिसर्प जीव अन्तमुहूर्त्त में 12 योजन लम्बे हो सकते हैं। ( )

(h) अनाथी मुनि ने अशुचि भावना भाई थीं। ( )

(i) यावत्कथिक अनशन के चौदह भेद हैं। ( )

(j) छठा प्रातिहार्य 'भामण्डल' है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	पृथ्वीकाय	(क) महोरग	....
(b)	बेइन्द्रिय	(ख) उपदेश रुचि	....
(c)	तेइन्द्रिय	(ग) वैतरणी	....
(d)	चौरेन्द्रिय	(घ) सुजात	....
(e)	परमाधामी देव	(च) अव्याबाध	....
(f)	वाणव्यन्तर देव	(छ) शीप	....
(g)	लोकान्तिक देव	(ज) विपाक विचय	....
(h)	ग्रैवेयक देव	(झ) गेरु	....
(i)	धर्मध्यान का पाया	(य) बिच्छू	....
(j)	धर्मध्यान कर लक्षण	(र) खटमल	....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं देवकी को भविष्य बताने वाला हूँ। ....

(b) मैं 400 माताओं को प्रतिदिन चरण-वन्दन के लिए जाता था। ....

(c) मुझमें निदान करने के 9 रूप बतलाये हैं। ....

(d) मैंने भगवान महावीर को 82 रात्रि तक अपने गर्भ में रखा। ....

(e) मैं निर्ग्रन्थों के लिए आचरण में निषिद्ध हूँ। ....

(f) मैं प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हूँ। ....

(g) मैं सूक्ष्म पदार्थ विषयक चिन्तन में नहीं उलझने वाला ध्यान हूँ। ....

(h) मैं आलोचना करने के बाद पश्चात्ताप नहीं करने वाला हूँ। ....

(i) मैंने संवर भावना भाई थीं। ....

(j) मैं समुदाय के रूप में लगने वाली क्रिया हूँ। ....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2 = (24)**

(a) जैन श्रमण शोभा के लिए किनका आचरण नहीं करें ?

....

....

....

(b) कौनसे निर्ग्रन्थ ऋजुदर्शी होते हैं ?

....

....

....

(c) उत्तम समाधि वाले संयमी साधु क्या करते हैं ?

....

....

....

(d) भगवान की वाणी का क्या अतिशय है ?

....

....

....

(e) संवर तत्त्व को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

(f) खेचर के कोई चार भेद लिखिए।

....

....

....

(g) शयन पुण्य किसे कहते हैं ?

....

....

....

(h) 'णेसत्थिया' क्रिया कैसे लगती है ?

....

....

....

(i) 'पारांचिकार्ह' प्रायश्चित्त क्या है ?

....

....

....

(j) 'प्रकृति बन्ध' को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

(k) सिद्धों में पाये जाने वाले दो भावों के नाम लिखिए।

....

....

....

(l) स्वयंबुद्ध सिद्ध कौन कहलाते हैं ?

....

....

....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) **प्रतिमाधारी साधु के भिक्षाग्रहण करने के कोई तीन प्रकार लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

निम्नलिखित को पूर्ण करके उनका भावार्थ भी लिखिए।

(b) **संजमे** ....

.... **महेसिणं।।**

भावार्थ ....

....

....

....

(c) **खवित्ता** ....

.... **परिनिव्वुडे।।**

भावार्थ ....

....

....

....

(d) **दुक्कराइं** ....

.... **नीरया।।**

भावार्थ ....

....

....

....

(e) सव्वमेयमणाइण्णं ....

.... विहारिणं।।

भावार्थ ....

....

....

....

(f) सोवच्चले ....

.... आमए।।

भावार्थ ....

....

....

....

(g) गिहिणो ....

.... आउरस्सरणाणि य।।

भावार्थ ....

....

....

....

(h) सन्निही ....

.... पलोयणा य।।

भावार्थ ....

....

....

....

(i) उन्निद्रहेम ....

.... परिकल्पयन्ति।।

भावार्थ ....

....

....

....

(j) **कल्पान्तकाल** ....

.... **शमयत्यशेषम्।।**

भावार्थ ....

....

....

....

(k) **इत्थं यथा** ....

.... **विकाशिनोऽपि।।**

भावार्थ ....

....

....

....

(l) **मन्दार सुन्दर** ....

.... **वचसां ततिर्वा।।**

भावार्थ ....

....

....

....